तपती धूप में भी दिखें कूल और स्टाइलिश

मौसम बदलते ही फैशन का मिजाज भी बदल जाता है और इसी के साथ बदलती हैं हमारी स्टाइल चॉइसेज। आज की महिलाएं चाहे टीनएज हों, यंग प्रोफेशनल्स या मिड एज, हर मौसम के अनुसार अपने वॉर्डरोब को अपडेट रखना पसंद करती हैं। खासकर गर्मियों में स्टाइलिश दिखते हुए कंफर्टेबल रहना थोड़ा मुश्किल जरूर होता है, लेकिन सही फैब्रिक, प्रिंट और कलर चुनकर इस चुनौती को आसानी से पार किया जा सकता है।

फैब्रिक पर दें ध्यान

गर्मियों के मौसम में सबसे पहले ध्यान देना चाहिए फैब्रिक पर। हल्के, सॉफ्ट और ब्रीदेबल कपड़े जैसे कॉटन, लिनन, रेयॉन और मलमल इस सीजन के लिए बेस्ट माने जाते हैं। ये न केवल पसीना सोखते हैं, बल्कि शरीर को ठंडा भी रखते हैं। इसके साथ ही इन फैब्रिक्स में आने वाले प्रिंट्स आपके लुक को और भी आकर्षक बना देते हैं।

स्टाइल को दें मॉडर्न टच

जहां तक प्रिंट्स की बात है, फ्लोरल प्रिंट्स हर साल समर फैशन का हिस्सा बने रहते हैं। छोटे-छोटे फूलों से लेकर बड़े-बड़े बोल्ड फ्लोरल पैटर्न तक, ये हर तरह के आउटफिट में खूबसूरती जोड़ते हैं। फ्लोरल प्रिंट्स न केवल फ्रेश और कूल लुक देते हैं, बल्कि दिन के समय आउटिंग, ब्रंच या कैजुअल मीटअप के लिए एकदम परफेक्ट रहते हैं। इसके अलावा, इस सीजन में चेक्स, स्ट्राइप्स और ज्योमेट्रिक प्रिंट्स भी काफी ट्रेंड में हैं, जो आपके स्टाइल को एक मॉडर्न टच देते हैं।

सही कलर का चुनाव

कलर्स किसी भी आउटफिट की जान होते हैं। गर्मियों में हल्के और सॉफ्ट कलर्स पहनना सबसे अच्छा रहता है। सफेद (व्हाइट) रंग इस मौसम का सबसे पसंदीदा रंग माना जाता है, क्योंकि यह गर्मी को कम महसूस कराता है और एक क्लासी लुक देता है। व्हाइट मैक्सी ड्रेस, चिकनकारी सूट, अनारकली या शर्ट-ट्राउजर सेट हर रूप में शानदार लगता है। व्हाइट के अलावा पेस्टल शेड्स जैसे बेबी ब्लू, लैवेंडर, पिंक, मिंट ग्रीन और पीच भी इस सीजन में काफी ट्रेंड में हैं। ये रंग आंखों को सुकून देते हैं और एक फ्रेश लुक प्रदान करते हैं। खासतौर पर लैवेंडर और सी ग्रीन जैसे कलर्स पिछले कुछ समय से फैशन में अपनी खास जगह बनाए हुए हैं। इसके साथ ही कोरल और पीच जैसे सॉफ्ट वॉर्म टोन भी समर आउटफिट्स में चार चांद लगा देते हैं। अगर आप अपने समर लुक को और बेहतर बनाना चाहती हैं, तो हल्के एक्सेसरीज जैसे स्ट्रॉ हैट, सनग्लासेस, स्लिंग बैग और मिनिमल ज्वेलरी का इस्तेमाल जरूर करें। सही फुटवियर जैसे फ्लैट्स, सैंडल या एस्पैड्रिल्स आपके पूरे लुक को कंप्लीट कर देते हैं। इस तरह, सही फैब्रिक, ट्रेंडी प्रिंट्स और सॉफ्ट कलर्स के साथ आप गर्मियों में भी स्टाइलिश और कंफर्टेबल दोनों रह सकती हैं।

कंफर्ट और स्टाइल का कांबो

अगर आप कुछ नया ट्राय करना चाहती हैं, तो टाई-डाई प्रिंट्स, ब्लॉक प्रिंट्स और इंडो-वेस्टर्न फ्यूजन स्टाइल्स भी इस बार खूब पसंद किए जा रहे हैं। खासतौर पर हैंडब्लॉक प्रिंटेड कुर्ते, स्कर्ट्स और को-ऑर्ड सेट्स युवतियों के बीच काफी लोकप्रिय हो रहे हैं। इसके अलावा, शर्ट ड्रेस, रैप ड्रेस और कफ्तान स्टाइल आउटफिट्स भी गर्मियों में कंफर्ट और स्टाइल का बेहतरीन मेल पेश करते हैं।

ड्रेस की लंबाई और फिटिंग

ड्रेस की लंबाई और फिटिंग भी बहुत मायने रखते हैं। समर सीजन में मैक्सी ड्रेसेस, मिडी ड्रेसेस और शॉर्ट ड्रेसेस काफी पसंद की जाती हैं। ये न सिर्फ पहनने में आसान होती हैं, बल्कि हर बॉडी टाइप पर अच्छी भी लगती हैं। अगर आप प्लस साइज हैं, तो छोटे और मीडियम प्रिंट्स आपके लिए ज्यादा फ्लैटरिंग रहेंगे। वहीं स्लिम फिगर वाली महिलाएं बड़े और एक्सपेरिमेंटल प्रिंट्स भी आसानी से कैरी कर सकती हैं।

जिंदगी का सफर

सुरों की वह शक्ति जो इतिहास बन गई

भारतीय संगीत आकाश का वह अनमोल सितारा सदा के लिए मौन हो गया है, जिसकी स्वर-लहरियों ने सात दशकों तक हर पीढ़ी की धड़कनों को एक नई ताल दी। 12 अप्रैल को 92 वर्ष की आयु में आशा भोंसले का निधन केवल एक महान गायिका का जाना नहीं, बल्कि उस अद्वितीय 'अदा', 'नजाकत' और 'स्वैग' का अवसान है, जिसने साड़ी की गरिमा में भी भारतीय पॉप और कैबरे संगीत को वैश्विक मंच पर नई पहचान दिलाई। 800 से अधिक फिल्मों में 12,000 से ज्यादा गीतों को अपनी आवाज देकर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज होने वाली आशा जी का जीवन केवल सुरों की साधना भर नहीं था, बल्कि यह संघर्ष, आत्मविश्वास और निरंतर आत्म-नवाचार की अद्भुत गाथा भी था।

योगेश कुमार गोयल
लेखक

8 सितंबर 1933 को महाराष्ट्र के एक प्रतिष्ठित संगीत परिवार में जन्मी आशा भोंसले का जीवन आरंभ से ही सुरों से जुड़ा था, किंतु नियति ने उनके बचपन को सहज नहीं रहने दिया। पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर से शास्त्रीय संगीत की प्रारंभिक शिक्षा मिली, परंतु महज 9 वर्ष की आयु में पिता के निधन ने उनके जीवन से संरक्षण का साया छीन लिया। परिवार आर्थिक संकट से जूझ रहा था और बड़ी बहन लता मंगेशकर ने घर की जिम्मेदारी संभाली। ऐसे कठिन समय में आशा जी ने भी कम उम्र में ही संघर्ष को अपना साथी बना लिया। पार्श्व गायन की दुनिया में उनका सफर किसी सरल राह पर नहीं चला। उस दौर में लता मंगेशकर का वर्चस्व था और बड़े संगीतकारों की पहली पसंद वही थी। आशा भोंसले के संगीत सफर में वास्तविक परिवर्तन तब आया, जब उनकी मुलाकात संगीतकार ओ.पी. नैयर से हुई। नैयर साहब ने उस समय की परंपरा को चुनौती देते हुए लता मंगेशकर के बिना संगीत रचना का निर्णय लिया और उन्हें आशा की आवाज में वह अनोखी 'शरारत', 'चंचलता' और 'कशिश' दिखाई दी, जिसकी वे तलाश कर रहे थे। 1957 की फिल्म नया दौर का गीत 'उड़े जब जब जुल्फें तेरी' आशा जी के करियर का टर्निंग प्वाइंट साबित हुआ, जिसने उन्हें मुख्यधारा की नायिकाओं की आवाज बना दिया। वहीं 1956 की सी.आई.डी. में 'लेके पहला पहला प्यार' गीत में शमशाद बेगम की स्थिरता और आशा की चुलबुली अदाओं का अद्भुत संगम श्रोताओं के दिलों में बस गया। यही वह दौर था, जब आशा जी ने अपनी ऐसी गायिका की एक अलग पहचान गढ़ी, जिसकी आवाज में 'बोल्डनेस', 'वेस्टर्न वाइब' और अद्वितीय ऊर्जा का सम्मोहन था।

1970 का दशक हिंदी सिनेमा में संगीतात्मक प्रयोगों का स्वर्णिम काल था और इसी दौर में आशा भोंसले को मिला उनका सबसे सशक्त रचनात्मक साथी 'आर.डी. बर्मन', जिन्हें प्यार से 'पंचम' कहा जाता है। इस अद्वितीय जोड़ी ने न केवल गीतों को नया रूप दिया, बल्कि संगीत की परंपरागत सीमाओं को भी तोड़ डाला। 'पिया तू अब तो आजा' और 'दम मारो दम' जैसे गीतों ने आशा जी को 'कैबरे क्वीन' के रूप में स्थापित कर दिया। उनकी आवाज में जो मादकता, ऊर्जा और आधुनिकता थी, उसने भारतीय संगीत में पश्चिमी प्रभाव को एक नया आयाम दिया। हालांकि 'दम मारो दम' को लेकर उस समय काफी विवाद हुआ। इसे 'अश्लील' कहकर आलोचना झेलनी पड़ी, यहां तक कि ऑल इंडिया रेडियो ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया और दूरदर्शन ने फिल्म से इसे हटा दिया। फिर भी, आशा जी की आवाज ने इस गीत को अमर बना दिया। दिलचस्प यह है कि जहां एक ओर वे कैबरे और पॉप की पहचान बन रही थी, वहीं 'इजाजत' के 'मेरा कुछ सामान' में उन्होंने गहन भावनाओं की ऐसी अभिव्यक्ति दी, जो उनकी असाधारण बहुमुखी प्रतिभा को सिद्ध करती है।

1980 के दशक तक आशा भोंसले को प्रायः चुलबुले, चंचल और आधुनिक गीतों की आवाज के रूप में देखा जाने लगा था, लेकिन इसी धारणा को तोड़ते हुए संगीतकार खय्याम ने उन्हें फिल्म 'उमराव जान' (1981) के लिए चुना। यह एक ऐसा निर्णय था, जिसने इतिहास रच दिया। खय्याम साहब की शर्त भी उतनी ही असाधारण थी, 'आशा, मुझे इन गीतों में तुम्हारी जानी-पहचानी आवाज नहीं चाहिए।' उन्होंने उनसे अपनी आवाज का स्केल लगभग डेढ़ सुर नीचे लाकर गाने को कहा ताकि गजलों में नजाकत और गहराई उतर सके। परिणाम अद्भुत था। 'दिल चीज क्या है' और 'इन आंखों की मस्ती के' जैसे गीतों में आशा जी ने ऐसी संजीदगी, दर्द और अदब का संसार रचा कि हर श्रोता मंत्रमुग्ध हो उठा। यह केवल गायन नहीं, बल्कि भावनाओं की सूक्ष्म अभिव्यक्ति थी। इसी फिल्म ने यह सिद्ध कर दिया कि उनकी प्रतिभा किसी एक शैली तक सीमित नहीं है और इसके लिए उन्हें अपना पहला राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

संगीत के साथ-साथ उन्हें पाक-कला में भी गहरी रुचि थी और वे एक उत्कृष्ट शेफ के रूप में जानी जाती थीं। उनकी इसी रुचि ने 'आशाज' नाम से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रेस्टोरेंट श्रृंखला को जन्म दिया, जो दुनिया के 10 से अधिक देशों में भारतीय स्वाद का परचम लहरा रही है। सम्मानों की दृष्टि से भी उनका सफर उतना ही गौरवशाली रहा। उन्हें वर्ष 2008 में पद्म विभूषण, 2000 में भारतीय सिनेमा के सर्वोच्च सम्मान दादासाहेब फाल्के पुरस्कार और 7 फिल्मफेयर पुरस्कारों से नवाजा गया। इसके अतिरिक्त, सबसे अधिक गीत रिकॉर्ड करने वाली कलाकार के रूप में उनका नाम गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज है, जो उनकी अथाह साधना और समर्पण का प्रमाण है। उनके करियर के विभिन्न पड़ाव भी उनकी बहुमुखी प्रतिभा को दर्शाते हैं। आशा भोंसले अपनी मधुर मुस्कान और अमिट उपस्थिति के साथ हमारे दिलों में हमेशा जीवित रहेंगी। अलविदा, सुरों की अमर जादूगरनी!

आर के नारायण के उपन्यास पर बनी कालजयी फिल्म 'गाइड'

फ्लैश बैक

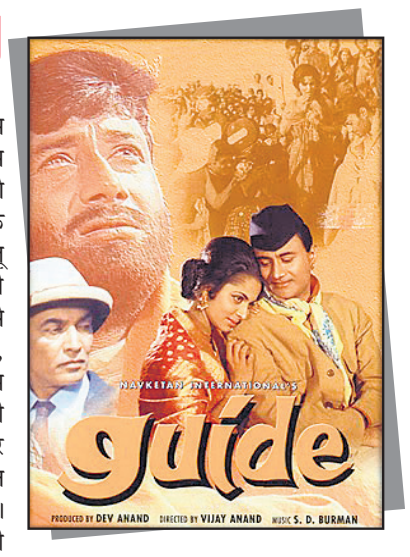

नवकेतन बैनर के तले बनी देव आनंद की फिल्म 'गाइड' 6 दिसंबर 1965 को रिलीज हुई थी। इस फिल्म को बने 61 साल हो गए हैं। इस फिल्म को भारतीय हिंदी सिनेमा के इतिहास में कल्ट क्लासिक होने का गौरव प्राप्त है। फिल्म में देव आनंद ने राजू नाम के गाइड की भूमिका निभाई थी, जो रोजी (वहिदा रहमान) के प्रति आकर्षित होता है और उसे डांसर बनने के लिए प्रेरित करता है। प्रेम, लालच, पतन और अंततः आत्मज्ञान को दर्शाती यह फिल्म भारतीय रिश्तो के बदलते उतार-चढ़ाव को दिखती है। फिल्म में किशोर साहू, लीला चिटनिस, अनवर हुसैन, गजानन जागीरदार, प्रेम सागर, कृष्ण धवन और उल्लास आदि ने भी विभिन्न भूमिकाएं निभाई हैं।

फिल्म राजू गाइड की कहानी है, जिसकी मुलाकात मार्को और उसकी पत्नी रोजी से होती है। मार्को द्वारा अपेक्षित होने पर राजू रोजी को सहारा देता है और रोजी को नृत्य के प्रति जुनून को पहचानकर उसे प्रसिद्ध नृत्यांगना बनाने में मदद करता है। दोनों के बीच प्यार हो जाता है और समय के साथ दोनों अमीर भी हो जाते हैं, लेकिन राजू के मन में लालच और असुरक्षा की भावना आ जाती है। वह रोजी के जाली दस्तखत कर अपराध करता है और जेल चला जाता है। जेल से छूटने के बाद एक मंदिर में शरण लेता है। गांव वाले उसे साधु समझ लेते हैं। जब गांव में सूखा पड़ता है, तो राजू गांव के लिए उपवास रखता है और अंत में अपने निःस्वार्थ त्याग के माध्यम से जीवन से मुक्ति पा जाता है।

दीपक नौगांई
लेखक, हल्द्वानी

यह फिल्म 'मालगुडी डेज' वाले लेखक आरके नारायण के उपन्यास 'गाइड' पर आधारित थी। आरके नारायण एक जाने-माने लेखक थे और उनकी एक किताब दुनियाभर में तारीफें बटोर रही थी। एक बार किसी ने देव साहब को यह किताब पढ़ने को दी। उन्हें इसकी कहानी अच्छी लगी और उन्होंने इस पर फिल्म बनाने का निर्णय लिया। हालांकि मूल उपन्यास और फिल्म की कहानी में कुछ अंतर भी है। फिल्म में राजू रोजी का प्यार पाने के लिए जतन करता है, लेकिन फिल्म में रोजी पहले से ही अपनी शादी से दुखी है। देव आनंद ने हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में इस फिल्म को बनाने का निर्णय लिया। देव आनंद ने फिल्म के निर्देशन का जिम्मा पहले अपने भाई चेतन आनंद को दिया था। चेतन वहीदा रहमान की जगह फिल्म में लीला नायडू को लेना चाहते थे, क्योंकि वह अच्छी डांसर थी, लेकिन देव साहब इसके लिए तैयार नहीं हुए। फिल्म के शूटिंग के दौरान भी देव आनंद और चेतन आनंद के बीच कुछ मतभेद उभर आए। नतीजन चेतन आनंद ने फिल्म ही छोड़ दी और वह अपनी फिल्म 'हकीकत' बनाने में जुट गए। उसके बाद फिल्म को निर्देशित करने की जिम्मेदारी देव आनंद ने अपने दूसरे भाई विजय आनंद (गोल्डी) को दी। फिल्म ने सफलता के नए प्रतिमान स्थापित किए। पहली बार गाइड में एंटी हीरो की भूमिका की झलक देव आनंद के चरित्र में दिखाई देती है।

फिल्म के गाने लिखने की भी अलग कहानी है। पहले गाने लिखने के लिए हसरत जयपुरी को साइन किया गया था, लेकिन उनके लिखे एक गाने की लाइन देव आनंद को पसंद नहीं आई। उसे बदलने को कहा गया परंतु हसरत ने ऐसा करने से इनकार कर दिया और फिल्म ही छोड़ दी। इसके बाद शैलेंद्र को फिल्म में लिया गया, जिन्होंने फिल्म के सारे गीत लिखे। देव आनंद और वहीदा रहमान पर फिल्माए गीत। 'आज फिर जीने की तमन्ना है' क्लासिक बन गया और सुपरहिट गीतों में शामिल हुआ। फिल्म में गीतों को लता मंगेशकर, मोहम्मद रफी, किशोर कुमार ,मन्ना डे और एसडी बर्मन ने अपनी आवाजें दी है। फिल्म गाइड बॉक्स ऑफिस का सुपरहिट रही और आज भी बहुत पसंद की जाती है। कई फिल्म फेयर पुरस्कार इस फिल्म को प्राप्त हुए, जिसमें सर्वश्रेष्ठ फिल्म, सर्वश्रेष्ठ अभिनेता, अभिनेत्री, निर्देशक, लेखक और छायाकार शामिल हैं।